+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(हमारा पारिस्थितिकी-तंत्र)

(April 2024)

(Part III)

TOPICS TO BE COVERED

- पश्चिमी घाट का एक समग्र अन्वेषण
- आर्द्रभूमि पर रामसर कन्वेंशन
- सुंदरबन बायोस्फीयर (जीवमंडल)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

पश्चिमी घाट का एक समग्र अन्वेषण:

परिचय:

- पश्चिमी घाट को एक वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट माना जाता है और अक्सर इसे भारत के पठारी क्षेत्र को अलग करने वाली तेज ढाल के रूप में भी जाना जाता है, इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल का प्रतिष्ठित पद भी प्राप्त है।
- पश्चिमी घाट, जिसे सह्याद्रि पर्वत श्रृंखला के रूप में भी जाना जाता है, उत्तर में ताप्ती नदी से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक 8 N - 22 N के अक्षांशीय विस्तार तक फैला हुआ है। इसमें छह राज्यों के क्षेत्र शामिल हैं: गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु, और एक केंद्र शासित प्रदेश (दादरा और नगर हवेली)।

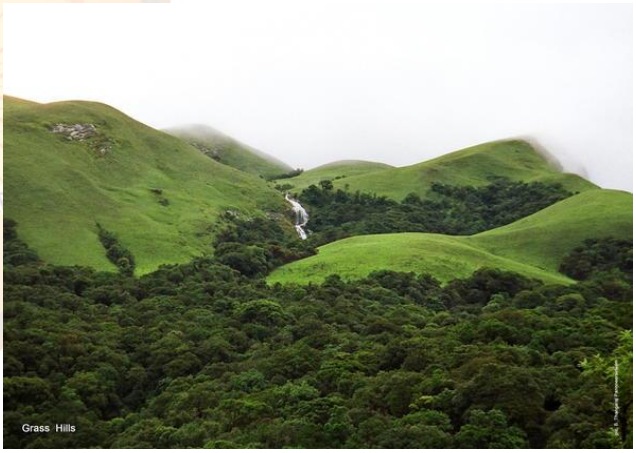

पश्चिमी घाट की स्थलाकृति:

- कई दृष्टियों से पश्चिमी घाट महत्वपूर्ण है। इसका एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसका भू-आकृतिक मूल्य मलावार वर्षावन जैव-भौगोलिक प्रांत से संबंधित है।

उनकी स्थिति पश्चिमी घाट को जैव-भौगोलिक रूप से विशिष्ट और असाधारण जैव विविधता युक्त - जैविक संपदा का एक मूल्यवान भंडार बनाती है।

- पश्चिमी घाट हिमालय से भी पुराने हैं और 'विकासवादी परिवर्तन क्षेत्र' होने का गौरव रखते हैं, जो 'अफ्रीका से बाहर' और 'भारत से बाहर' दोनों परिकल्पनाओं के लिए साक्ष्य प्रदान करते हैं। खड़ी चट्टानों, लहरदार पहाड़ियों, गहरी घाटियों और विशाल पठारों से विशिष्ट बने अपनी लुभावनी स्थलाकृति के लिए प्रसिद्ध, इन पहाड़ों ने लाखों साल पहले भारतीय उपमहाद्वीप के यूरेशियन प्लेट से टकराव के दौरान आकार लिया था। इस टक्कर के परिणामस्वरूप, भूमि ऊपर की ओर खिसक गई और पश्चिमी घाट के भव्य पर्वत उभर आए।
- विभिन्न पौधों और जानवरों की प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण आवास प्रदान करते हुए ये पर्वत भारतीय परिदृश्य में महत्वपूर्ण महत्व रखते हैं और जलवायु विनियमन में भी योगदान प्रदान करते हैं। पश्चिमी घाट की औसत ऊंचाई लगभग 1,200 मीटर है, कई चोटियां 2,600 मीटर तक ऊंची हैं। केरल में स्थित अनाईमुडी, पश्चिमी घाट की सबसे ऊंची चोटी है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

पश्चिमी घाट का प्राथमिक विभाजन:

- **उत्तरी घाट:** यह क्षेत्र **गुजरात से महाराष्ट्र तक फैला हुआ** है और पश्चिमी घाट के सबसे निचले और कम ऊबड़-खाबड़ हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है।
- **केंद्रीय घाट: कर्नाटक से केरल तक फैले हुए हैं** और पश्चिमी घाट के सबसे ऊंचे और सबसे ऊबड़-खाबड़ हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **दक्षिणी घाट: केरल से तमिलनाडु तक फैला हुआ है** और पश्चिमी घाट के सबसे विच्छेदित खंड का प्रतिनिधित्व करता है।

पश्चिमी घाट के स्थानीय नाम:

- **सह्याद्रि:** सह्याद्रि का अर्थ है ***'सह्या का निवास' (एक पौराणिक वर्षा नाग), जिसे इसके हरे-भरे परिदृश्य के कारण 'परोपकारी पर्वत' भी कहा जाता*** है। यह श्रृंखला **उत्तर में गुजरात से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र और कर्नाटक तक फैली हुई** है।
- **नीलगिरि पहाड़ियां:** 'नीले पहाड़ों' को दर्शाने वाले **पश्चिमी घाट के सबसे दक्षिणी भाग कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के संगम स्थल पर स्थित** है।
- **सह्यपर्वतम:** मलयालम में यह शब्द 'सहा पर्वत' के रूप में अनुवादित होता है और आमतौर पर **इस नाम का उपयोग केरल में, विशेष रूप से पर्वतमाला के दक्षिणी इलाकों में होता है।**

- **कार्डमम हिल्स: केरल-तमिलनाडु सीमा पर स्थित,** इन पहाड़ियों का नाम इस क्षेत्र में उगाया जाने वाला एक **प्रमुख मसाला पौधा 'इलायची' से लिया गया** है।
- **अन्नामलाई पहाड़ियां: केरल-तमिलनाडु सीमा से लगे पश्चिमी घाट के दक्षिणी इलाकों में** स्थित इन पहाड़ियों का नाम ***तमिल शब्द 'आनेई' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'हाथी', जो इस क्षेत्र में जंगली हाथियों की उपस्थिति का प्रतीक है।***

पश्चिमी घाट के प्राकृतिक संसाधन:

- पश्चिमी घाट प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है जो पारिस्थितिकी तंत्र और मानव समुदाय दोनों को बनाए रखते हैं। यह क्षेत्र गोदावरी, कृष्णा कावेरी और तुंगभद्रा सहित कई प्रमुख नदियों का जलक्षेत्र है, जो लाखों लोगों को सिंचाई, पीने और जल विद्युत उत्पादन के लिए पानी उपलब्ध कराती है।
- ये पर्वत मानसूनी हवाओं में रुकावट डालकर, उन्हें दक्कन के पठार तक पहुंचने से रोककर ठंडी, शुष्क स्थितियों को बनाए रखता है और भारत की जलवायु को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- इसके अलावा पश्चिमी घाट पूरे भारतीय प्रायद्वीप में पारिस्थितिकी और जैव-भौतिकी प्रक्रियाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, और इस प्रकार उष्णकटिबंधीय मानसून

प्रणाली का उदाहरण देते हुए देश भर में बारिश के मौसम का नमूना प्रदर्शित करते हैं।

- प्रायद्वीपीय भारतीय राज्यों में रहने वाले लगभग 24.5 करोड़ लोग पश्चिमी घाट से निकलने वाली नदियों के पानी पर काफी हद तक निर्भर हैं, यह लाखों लोगों की आजीविका को बनाए रखने के लिए इस क्षेत्र के पानी और मिट्टी के महत्वपूर्ण महत्व पर जोर देता है।
- यही नहीं, इस क्षेत्र में लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट, चूना पत्थर जैसे अन्य खनिज संसाधन भी प्रचुर मात्रा में है।

पश्चिमी घाट की जैव विविधता:

- पश्चिमी घाट, अपनी व्यापक लंबाई और भौगोलिक व्याप्ति के कारण, एक समृद्ध और विविध जैव विविधता का दावा करता है। **यह वैश्विक स्तर पर स्थानिकवाद के उच्चतम स्तरों में से एक है।**
- पश्चिमी घाट की जलवायु और ऊंचाई वाले ढाल ने विविध प्रकार की वनस्पतियों को जन्म दिया है, जिनमें सदाबहार, अर्ध-सदाबहार, नम पर्णपाती और शुष्क पर्णपाती वनस्पति शामिल हैं।

- पारिस्थितिकी विशेषताओं और पौधों की संरचना के आधार पर, **पश्चिमी घाट क्षेत्र में चार प्रमुख वन प्रकार और 23 अलग-अलग वन उपप्रकार शामिल हैं।** जलवायु और ऊंची ढाल ने पौधों के प्रकारों की एक विविध श्रृंखला को जन्म दिया है, जिसमें **सदाबहार, अर्ध-सदाबहार, नम पर्णपाती और शुष्क पर्णपाती** रूप शामिल हैं।
- ऐसा अनुमान है कि **इस क्षेत्र में निचले समूहों से लेकर फूल वाले पौधों तक लगभग 12,000 प्रजातियां पाई जाती हैं।** उनमें से, *इस अत्यधिक स्थानिक क्षेत्र में कुल 5,800 फूल वाले पौधों की प्रजातियों में से लगभग 2,100 प्रजातियां स्थानिक फूल वाले पौधे हैं।* यह **भारत की कुल वनस्पति का लगभग 27 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है।**
- पश्चिमी घाट में जीव-जंतुओं की असाधारण विविधता है, जो **उन्हें दुनिया की जैव विविधता वाले हॉटस्पॉट में से एक बनाती है।** **IUCN रेड लिस्ट के अनुसार विश्व स्तर पर खतरे के रूप में सूचीबद्ध न्यूनतम 325 प्रजातियों का घर है।** विश्व स्तर पर खतरे में पड़ी इन प्रजातियों में से ***129 को असुरक्षित, 145 को लुप्तप्राय और 51 को गंभीर रूप से लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।***
- पश्चिमी घाट कई प्रमुख स्तनपायी प्रजातियों का घर है, जिनमें एशियाई हाथी, गौर और वाघ जैसी विश्व स्तर पर खतरे में पड़ी प्रजातियों की महत्वपूर्ण आबादी

शामिल है। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र **शेर-पूंछ वाले मकाक, नीलगिरि ताहर और नीलगिरि लंगूर जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों की मेजबानी करता है, जो इस क्षेत्र के लिए अद्वितीय हैं।**

स्वदेशी ज्ञान प्रणाली:

- पश्चिमी घाट में रहने वाले **स्वदेशी समुदायों के पास पीढ़ियों से संचित औषधीय पौधों और उनके गुणों का विशाल ज्ञान है।**
- यह ज्ञान, जो **अक्सर कहानी सुनाने और प्रथाओं के माध्यम से पारित किया जाता है, उनकी भलाई और सांस्कृतिक पहचान के लिए महत्वपूर्ण** है।

पश्चिमी घाट को लेकर खतरा:

- अपने गहन पारिस्थितिकी महत्व के बावजूद, **पश्चिमी घाट को कई खतरों का सामना करना पड़ रहा है जो उनकी अद्वितीय जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को खतरे में डालते हैं।**
- **प्रमुख चिंता, निवास स्थान का नुकसान और विखंडन है, जो मुख्य रूप से कॉफी, चाय, ताड़, रबर और अन्य फसलों की खेती से प्रेरित है**, जिससे बड़े पैमाने पर वनों की कटाई हो रही है।

- **वन्यजीवों का अवैध शिकार, वनों की कटाई, अत्यधिक मछली पकड़ना और पशुओं की चराई प्रकृति के विनाश को और बढ़ा देती** है, जिससे वन और जलीय पारिस्थितिक तंत्र को अपूरणीय क्षति होती है।
- यही नहीं, **पहाड़ी क्षेत्रों में रेलवे लाइनों, खनन कार्यों और पर्यटक बुनियादी ढांचे का निर्माण प्राकृतिक सद्भाव के नाजुक संतुलन को बाधित करता है, जिससे पश्चिमी घाट की पारिस्थितिक अखंडता के लिए अतिरिक्त खतरा पैदा होता है।**

पश्चिमी घाट का संरक्षण और प्रबंधन:

- भारत सरकार ने पश्चिमी घाट के संरक्षण के उद्देश्य से कई पहले लागू की हैं। पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, और वन अधिकार अधिनियम, पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र (ईएसजेड) की घोषणा आदि जैसे कानून शामिल करके एक मजबूत कानूनी ढांचे के माध्यम से वन्यजीवों और उनके निवास, संरक्षित क्षेत्र निर्दिष्ट करके और वन-निवास समुदायों के अधिकारों को मान्यता देकर कानूनी सुरक्षा प्रदान करने के प्रयास किए गए हैं।
- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, राज्य वन विभाग और राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण जैसी संस्थाएं और एजेंसियां पश्चिमी घाट में संरक्षण प्रयासों की देखरेख में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- हालांकि, चुनौतियां बनी हुई हैं, **जिनमें नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन, संरक्षण के साथ विकास को संतुलित करना, अंतर-राज्य समन्वय सुनिश्चित करना और उभरते जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को संबोधित करना शामिल है।** पश्चिमी घाट के सफल संरक्षण के लिए **सरकार, स्थानीय समुदायों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य हितधारकों के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है।**

आर्द्रभूमि पर रामसर कन्वेंशन:

परिचय:

- आर्द्रभूमि पर अंतरराष्ट्रीय महत्व की कन्वेंशन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के उद्देश्य से राष्ट्रों के बीच पहली आधुनिक संधि के रूप में विशिष्ट है। आर्द्रभूमि (वेटलैंड्स) पर कन्वेंशन पर हस्ताक्षर 1971 में ईरान के एक छोटे शहर रामसर में हुए थे। तब से आर्द्रभूमि पर कन्वेंशन को रामसर कन्वेंशन के रूप में जाना जाता है।
- रामसर आर्द्रभूमि के मुख्य उद्देश्य दुनिया भर में आर्द्रभूमि के नुकसान को रोकना और जो शेष हैं उनका विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग और प्रबंधन के माध्यम से संरक्षण करना है।

आर्द्रभूमि पर रामसर कन्वेंशन:

- रामसर कन्वेंशन के अंतर्गत नदियों से लेकर प्रवाल भित्तियों तक विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक और मानव निर्मित पर्यावासों को आर्द्रभूमि के रूप में वर्गीकृत किया जा

सकता है। आर्द्रभूमि (वेटलैंड्स) में दलदल, कच्छ क्षेत्र, अपगामी नदियां, झीलें, लवण कच्छ, मडफ्लैट (ज्वारीय आर्द्रभूमि), मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियां, दलदल, पीट बोग (आंशिक रूप से सड़ चुकी वनस्पति या कार्बनिक पदार्थ का संचय), या जलाशय शामिल है चाहे वे प्राकृतिक हो या कृत्रिम, स्थायी हो या अस्थायी।

- इन क्षेत्रों में कम ज्वार पर छह मीटर की गहराई तक ताजा या खारा जल स्थिर या प्रवाहमय हो सकता है और इसमें अंतर्देशीय नदियां तथा तटीय या समुरी जल शामिल हो सकते है। यहां तक कि अनेक आर्द्रभूमि क्षेत्र भूमिगत भी है।
- रामसर कन्वेंशन के तहत नामित होने के बाद इन स्थलों को कन्वेंशन की अंतरराष्ट्रीय महत्व के आर्द्रभूमि स्थलों की सूची में जोड़ दिया जाता है और रामसर साइटों के रूप में जाना जाता है। आर्द्रभूमि को रामसर साइट के रूप में नामित करने के साथ देश आर्द्रभूमि के संरक्षण और इसके विवेकपूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एक प्रबंधन ढांचे की स्थापना और देखरेख करने पर सहमत होते हैं।

- कन्वेंशन के तहत विवेकपूर्ण उपयोग को मोटे तौर पर आर्द्रभूमि के पारिस्थितिक स्वरूप को बनाए रखने के रूप में परिभाषित किया गया है।

रामसर आर्द्रभूमि के मानदंड:

- रामसर कन्वेंशन के तहत, किसी आर्द्रभूमि को रामसर वेटलैंड साइट के रूप में घोषित किया जाता है **अगर वह वेटलैंड कन्वेंशन के तहत निर्धारित नौ मानदंडों में से किसी एक को पूरा करती है।**
- **पहला मानदंड प्रतिनिधि, दुर्लभ या अद्वितीय आर्द्रभूमि प्रकार वाली साइटों को संदर्भित करता है**, और **अन्य आठ जैविक विविधता के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय महत्व की साइटों को कवर करते हैं।**
- ये मानदंड कन्वेंशन द्वारा जैव विविधता को बनाए रखने के महत्व पर जोर देते हैं।

भारत में रामसर आर्द्रभूमि स्थल (जनवरी 2024 तक):

- लोकटक झील और खेचियोपालरी झील जैसे प्रतिष्ठित स्थलों के साथ आर्द्रभूमियाँ भारत में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व रखती हैं। देश की विविध आर्द्रभूमियाँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- भारत ने आर्द्रभूमि संरक्षण में प्रगति की है, जिसमें दक्षिण एशिया में रामसर साइटों का सबसे बड़ा नेटवर्क (80) है, जो 13.3 लाख हेक्टेयर को कवर करता है।

- ये स्थल विभिन्न जीव समूहों में 6200 प्रजातियों की मेजबानी करते हुए जैव विविधता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

भारत की आर्द्रभूमियाँ लाखों प्रवासी पक्षियों के लिए महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में काम करती हैं, जो विश्व स्तर पर जल पक्षियों की आबादी को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

- वैश्विक खतरों के बावजूद, भारत कानूनी सुरक्षा और संरक्षण प्रयासों के माध्यम से सिकुड़ती आर्द्रभूमि की प्रवृत्ति को उलट रहा है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- आर्द्रभूमि संरक्षण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता लगातार मजबूत हो रही है और हाल के मील के पत्थर में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। जनवरी 2024 में, **भारत ने अमूल्य पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने के प्रति अपने समर्पण को प्रदर्शित करते हुए, कर्नाटक और तमिलनाडु में पांच नई साइटों को नामित करके गर्व से अपनी रामसर साइट की संख्या को 80 तक बढ़ा दिया।**

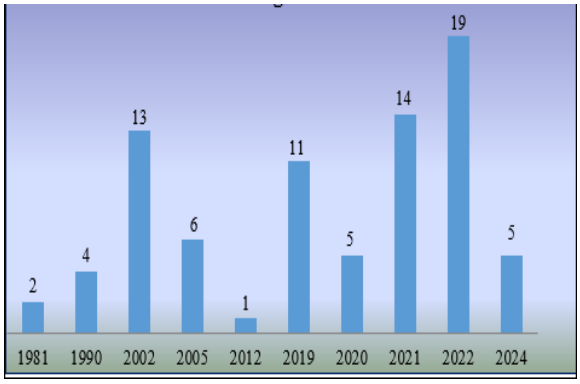

- यह उपलब्धि **अगस्त 2022 में स्थापित गति पर आधारित है जब भारत ने अपने रोस्टर में 11 आर्द्रभूमियों को जोड़ा था, जो देश की आजादी के 75वें वर्ष की स्मृति में एक मार्मिक संकेत था।**
- इसके अतिरिक्त, **वेटलैंड्स ऑफ इंडिया पोर्टल वेटलैंड प्रबंधकों और हितधारकों के लिए एक ज्ञान केंद्र के रूप में कार्य करता है,** जो व्यापक जानकारी और संसाधन प्रदान करता है। ये प्रयास अपनी आर्द्रभूमि, जैव विविधता, जलवायु लचीलापन और मानव कल्याण के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और प्रबंधन के लिए भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- **नई रामसर साइटों की मान्यता:**
  - ➢ 31 जनवरी, 2024 तक, भारत गर्व से कुल 80 रामसर वेटलैंड्स का दावा करता है, जो **दक्षिण एशिया में सबसे अधिक वेटलैंड्स वाले देश के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करता** है।
  - ➢ इस उपलब्धि को पांच नए स्थलों के शामिल होने से बल मिला है, जिनमें ***तमिलनाडु में कराईवेट्टी पक्षी अभयारण्य और लॉन्गवुड शोला रिजर्व वन के साथ-साथ कर्नाटक में मगदी केरे संरक्षण रिजर्व, अंकसमुद्र पक्षी संरक्षण रिजर्व और अघनाशिनी मुहाना शामिल*** हैं।
  - ➢ ये पदनाम अपने अमूल्य आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने के लिए भारत की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।
- **आर्द्रभूमियों की राज्यवार सूची (80):**
  - ➢ तमिलनाडु (16)
  - ➢ उत्तर प्रदेश (10)
  - ➢ पंजाब, ओडिशा एवं जम्मू और कश्मीर (प्रत्येक में 6)
  - ➢ गुजरात, कर्नाटक एवं मध्य प्रदेश (प्रत्येक में 4)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

➢ केरल, हिमाचल एवं महाराष्ट्र (प्रत्येक में 3)

➢ पश्चिम बंगाल, राजस्थान एवं हरियाणा (प्रत्येक में 2)

➢ आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, गोवा, लद्दाख, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा एवं उत्तराखंड (प्रत्येक में 1)

विश्व आर्द्रभूमि दिवस:

- **1971 में अंतरराष्ट्रीय महत्व के वेटलैंड्स पर रामसर कन्वेंशन पर हस्ताक्षर करने** के उपलक्ष्य में हर साल **2 फरवरी को विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाया जाता** है।
- भारत 1982 से कन्वेंशन का एक पक्ष है।
- तमिलनाडु में अधिकतम संख्या बनी हुई है रामसर साइट्स (16) के बाद उत्तर प्रदेश (10) का नंबर आता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

सुंदरबन बायोस्फीयर (जीवमंडल):

परिचय:

- सुंदरबन विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा और मैंग्रोव वन है। भारतीय **सुंदरबन पश्चिम में मुरीगंगा नदी और पूर्व में हरिनभगा और रायमंगल नदियों से घिरा** है। इस पारिस्थितिकी तंत्र से होकर बहने वाली अन्य प्रमुख नदियाँ **सप्तमुखी, ठाकुरन, मतला और गोसाबा** हैं।

- सुंदरबन में जलीय और स्थलीय वनस्पतियों और जीवों की अत्यंत समृद्ध विविधता है। ***वास्तव में, सुंदरबन का अत्यधिक उत्पादक पारिस्थितिकी तंत्र प्राकृतिक मछली नर्सरी के रूप में कार्य करता है।***
- हालांकि यह कर्क रेखा के दक्षिण में हैं परन्तु समुद्र के नजदीक होने के कारण यहां का तापमान पूरे वर्ष भर लगभग एक समान ही रहता है। औसत वार्षिक वर्षा 1920 मिलीमीटर और औसत आर्द्रता लगभग 82 प्रतिशत रहती है जो पूरे वर्ष भर - एक-सी ही रहती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

सुंदरबन की अवस्थिति एवं भौगोलिक विशेषता:

- **सुंदरबन विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा क्षेत्र है** और दलदल वाला यह वनक्षेत्र कुल 10,200 वर्ग किलोमीटर में फैला है जिसमें **4,200 वर्ग किलोमीटर आरक्षित वनक्षेत्र भारत में और करीब 6,000 वर्ग किलोमीटर आरक्षित वनक्षेत्र बांग्लादेश** में है।
- **यह दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र भी है।** मैंग्रोव वनों से लगा उत्तर और पश्चिमोत्तर क्षेत्र का 5400 वर्ग किलोमीटर वाला गैर वनीय क्षेत्र भी भारतीय सुंदरबन क्षेत्र कहलाता है और इस तरह **भारत में आने वाला सुंदरबन आरक्षित क्षेत्र (अभयारण्य) कुल 9,600 वर्ग किलोमीटर में फैला** है। इसके पश्चिम में मुड़ीगंगा और पूर्व में हरिनभंगा तथा रायमंगल नदिया हैं।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में बहने वाली अन्य नदियां है- सप्तमुखी, ठकुरान, मातला और ग्वासवा।
- **भौगोलिक दृष्टि से सुंदरबन डेल्टा (मुहाना) लगातार विकसित होता विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है।** यह क्षेत्र पूरी तरह गंगा, मातला और विद्याधारी नदियों के बहाव के साथ आकर जमा हुई तलछट से ढका हुआ है।

सुंदरबन की पारिस्थितिकी विशेषताएँ:

- 1989 में समूचे सुंदरबन को आरक्षित सुंदरबन (जीवमंडल) बायोस्फीयर घोषित किया गया था। अपने अनूठे इकोसिस्टम के कारण सुंदरबन को 1989 में ही विश्व धरोहर स्थल भी घोषित किया गया था। **2001 के बाद से सुंदरबन बायोस्फीयर रिजर्व भारत में नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व के बाद दूसरा बड़ा बायोस्फीयर रिजर्व है।**
- सुन्दरवन अभयारण्य के बीचो-बीच स्थित **सुन्दरबन राष्ट्रीय उद्यान को यूनेस्को ने 1987 में विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्रदान की थी।**
- भारत सरकार ने इसे **रामसर कन्वेंशन के तहत अंतरराष्ट्रीय स्तर की महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि घोषित करने के लिए नामित किया हुआ है।**
- सुंदरबन बाघ अभयारण्य की स्थापना भारत सरकार ने 1973 में बाघ परियोजना स्कीम के अंतर्गत की थी। **सुंदरबन विश्व का एकमात्र मैंग्रोव वनक्षेत्र है जहां बाघ रह रहे हैं। इस वनक्षेत्र में बाघों की संख्या विश्व भर में सबसे अधिक है।**
- सुंदरबन में जलचर और थलचर वनस्पतियों और प्राणियों की खासी विविधता है। **यहां का अत्यधिक उत्पादक पारिस्थितिकी तंत्र, प्राकृतिक मछली विहार की भूमिका निभाता है।**

- सुंदरबन में **मैंग्रोव के कारण समुद्री तूफानों और चक्रवातों का प्रकोप** काफी कम रहता है और ज्वार-भाटों के कारण होने वाला भू-क्षरण भी बहुत हद तक रुक जाता है।
- लाखों लोग मछली पालन, शहद एकत्रित करने और ईंधन के लिए इमारती लकड़ी जुटाने जैसे कार्यों के माध्यम से अपनी जीविका चला रहे हैं।

सुंदरबन में पायी जाने वाली पशु प्रजातियां:

- **सुंदरबन मैंग्रोव वन क्षेत्र रॉयल बंगाल टाइगर (पैंथेरा टाइग्रिस) का सबसे बड़ा शरणस्थल एवं आवास है।**
- यहां स्तनपायी पशुओं की 58 प्रजातियां, सरीसृपों की 55 प्रजातियां तथा पक्षियों की लगभग 248 प्रजातियां रहती हैं।
- सुंदरबन में दुर्लभ और भयंकर किस्म के खतरनाक पशु भी बड़ी संख्या में हैं। इनमें इश्च्युराइन क्रेकोडायल (मगरमच्छ), फिशिंग कैट, ऊदबिलाव, जल में रहने वाले गिरगिट-छिपकली, गंगा में रहने वाली डॉल्फिन (प्लैटिनिस्टा गेंगेटिका), स्नवफिन डॉल्फिन, रिवर टेर्रापिन (बटागुर वास्का), समुद्र में रहने वाले मरीन कछुए जैसे- हरे समुद्री कछुए, हॉक्सबिल कछुआ और ओलिव रिडले वगैरह की भी काफी ज्यादा संख्या है।
- यहां रहने वाली शार्क और रे मछलियों की 6 प्रजातियां वन्यप्राणी (संरक्षण) अधिनियम की अनुसूची-1 में शामिल हैं।